पिछड़ी जाति के उत्थान में गुरूघासीदास बाबा का योगदान

Shruti Dew Gawaskar[1], Ramratan Sahu[2] & Dewcharan Gawaskar[3]
[1]Research Scholar,[2] Associate Professor, [3]Dewcharan Gawaskar
[1,2,3]Department of History, Dr C. V. Raman University, Bilaspur, India

Received: January 26, 2019 Accepted: March 16, 2019

प्राक्कथन– *19वीं शताब्दी में व्याप्त कुप्रथाओ, छूआछूत, अंधवि"वास पाखंड का प्रभाव पिछड़ी हुए वर्गो के लोगो पर था। समाज में व्याप्त कुरोतियो को समाप्त करके समाज को उपन्नति की ओर अग्रसर करने हेतु संत ।शरोमणि बाबा गुरूघासीदास जी का वि"ोष योगदान रहा एवं समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करके मानव–मानव एक समान के संदेश को प्रसारित किए। सत्य को आधार मानकर अपने अनुयायियों को चलने का संदेश दिए। सत्य, अहिंसा, करूणा, दया, सरलता, यवहार एंव परोपकार की भावना ग्रहण करके अपने मानवता का विकास करें ऐसा अपने अनुयायियों को उपदेश दिए। बाबा जी ने मार्ग दिखाया जिसके अनुसार सदैव सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, मास मंदिरा का सेवन नहीं करना, पशबलि प्रथा विरोध करना, परस्त्रीगमन की वर्जना, व्यसन से मुक्ति, मुर्ति पूजा का विरोध यह सात सिद्धांत दिया जिसका अनुसरण करके पिछड़ी वर्ग, शोषित, वचिंत, भेदभाव से ग्रसित, व्यक्तियों को समाज में समानता दिलाने एवं भेदभाव से मुक्त कराने हेतु सतनाम पंथ की स्थापना किये। जिसका प्रभाव बहुत से लोगों (पिछड़ी समाज) पर पड़ा और सतनाम पंथ का मार्ग स्वीकार कर संत ।शरोमणि बाबा गुरूघासीदास जी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने लगे। संयुक्त रूप से समाज का उत्थान एंव विकास करने में बाबा गुरूघासीदास जी का अतुलनीय योगदान रहा।*

भाब्दकोष: सतनामी समाज, छ.ग., अनुसूचित जाति।

I. प्रस्तावना– 19वीं शताब्दी के आसपास एंव उससे पहले व्याप्त जाति प्रथा, अंधवि"वास, कुप्रथायें, शोषित एंव वंचित वर्गो को हीन दृष्टि से देखा जाता था जिसके कारण वे धार्मिक एंव समाजिक स्थल जैसे मंदिर, पाठषाला इत्यादि से वंचित रखा जाता था। इस कारण निम्न वंग का सर्वांगीण विकास सम्भव न हो सका। निम्न जाति के लोगों के प्रति भेदभाव इतनी अधिक हो गयी कि निम्न वर्गो से अपनी दूरी बनाये रखने शुरू कर दिया जिस कारण निम्न जाति के लोगों द्वारा उच्च जाति क वर्गो के प्रति भय की भावना पनपने लगी।

संत शिर**ोमणि बाबा गुरूघासीदास जी का जीवन परिचय एंव काय**– संत षिरोमणि बाबा गुरूघासीदास जी का जन्म 18 दिसम्बर सन् 1756 ई. रायपुर जिला के गिरौदपुरी तहसील बलोदाबाजार में हुआ था। उनका जन्म साधरण कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम महंगूदास एंव माता का नाम अमरौतिन था। युवावस्था में ही संत ि"ारोमणि बाबा गुरूघासीदास जी का विवाह सिरपुर निवासी माता सफुरा से हुआ जिनसे उन्हे तीन पुत्र व दो पुत्री हुई। प्रथम पुत्र का नाम गुरू आगरदास, द्वितिय पुत्र का नाम गुरू बालकदास एंव तृतिय पुत्र का नाम गुरू अमरदास था। प्रथम पुत्री का नाम सुभद्रा बाई एंव द्वितिय पुत्री का नाम आगरमती थी। संत ि"ारोमणि बाबा गुरूघासीदासजी बचपन से ही छूआछूत, अंधवि"वास, कुप्रथाएँ एंव वंण व्यवस्था के विरोधी थे। वे समाज में समानता का प्रभुत्य स्थापित करना चाहते थे। वे विषमताएँ एंव उँच– नीच भेदभाव को कभी नहीं मानते इस कारण संत ि"ारोमणि बाबा गुरूघासीदास जी ने सात सिद्वांत का मार्ग दिया–

1. **अहिंसा के मार्ग को अपनाना**: संत गुरूघासीदास द्वारा हिंसा के मार्ग को त्याग कर अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। उनके अनुसार अहिंसा वह मार्ग है जिसे मनुष्य धारण कर संपूर्ण मानवता को प्रेम व आत्म–शुद्धि की सहायता से कठिन से कठिन संकटो में सफलता प्राप्त कर सकता है। संत गुरूघासीदासबाबा का संपूर्ण दशन– अहिंसा, सत्यता, समानता के स्तंभ पर खड़ा है। सत्य और अहिंसा मानव का आभूषण है, जो मनुष्य अहिंसा का पालन करता है वह मन–वचन व कर्म से साहसी तथा शक्तिशाली बन जाता है। अहिंसा शब्द के भीतर असीम शक्ति छुपी हुई है जो भावना सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तीनो क्षेत्रों के लिये आवश्यक है। बाबा गुरूघासीदास के अनुसार अहिंसा सिर्फ उपदेश नही है, बल्कि जीवन की कियात्मक सिद्वांत है जिस मार्ग को मनुष्य अपनाकर सामाजिक व्यवस्था एवं व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बना सकता है। अहिंसा व्यक्ति की अंर्तआत्मा आवाज है जिसे धारण कर मनुष्य असंभव को संभव में परिवर्तित करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। इस कारण ही बाबा द्वारा अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिये सभी मनुष्यों को प्रेरित किया। अहिंसा रुपी मार्ग को धारण कर मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव है।
2. **मूर्ति पूजा नहीं करना**: संत गुरूघासीदास के व्यक्तित्व जीवन में दाशनिक, योगी, धर्मसुधारक, समाजसुधारक, दया, करूणा, दृढ़ता, सत्यता, प्रेम–भाव, त्याग व हृदय की पवित्रता, समानता की भावना सभी गुण समाहित थे। और शिष्यों को भी अपने जीवन में धारण संदेश दिया, उनके द्वारा शुरू से ही कुरूतियों, पाखंड, बाहय आडंबर का विरोध किया गया। मूर्ति पूजा को उन्होने सनातन मत मूर्ति पूजा के विपरित एक परमात्मा की उपासना का अलग मार्ग मानव को दिया और उसी स्वरूप को धारण करने को कहा।

   मनुष्य को मूर्ति पूजा न कर सत्यरूपी आभूषण को धारण करना चाहिये। और सत् से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है तथा सृष्टि का मूलभूत आधार सत् ही है। सत् का शाब्दिक अर्थ शक्ति और सत्पुरूष का अर्थ अनादिशक्ति होता है अर्थात जो सर्वशक्तिमान परमपिता सत्पुरूष हैं। सत्रूपी शब्द के उच्चारण से ही आत्मशांति एवं सत्बुद्धि की प्राप्ति होती है जिसका अनुसरण कर मानव सभी दुख, कठिनाई, ऊलझनों व समस्याओं आदि से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। बाबा सदैव एकपंथमार्गी व अद्वेतवादी थे जिस कारण वह हिन्दु धर्म में फैली कुरूतियों का विरोध किया करते थे। उनका विचार था कि प्रत्येक मानव का शरीर ही उस मानव

का मंदिर है और मनुष्य को उसी मानवरूपी मंदिर की पूजा करनी चाहिये इन्ही कारणों से बाबा द्वारा कंकड–पत्थर से बने मंदिरों में जाना अपने पंथमार्गीयों के लिये निषेध कर दिया और सभी मानवों को समानता के भाव से देखते हुये मानव–मानव एक समान का संदेश दिया।

3. **चोरी नहीं करनाः** बाबा गुरूघासीदास के अनुसार मानव समानता ही जीवन की सर्वोकृष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम है मनुष्य को सदैव ही लोभ, मोह–माया, छल–कपट, चोरी, मंदिरापान इत्यादि व्यवसनों का त्याग कर देना चाहिये एवं सत्य के मार्ग का अनुसरण करना चाहिये। मनुष्य को सदैव सीधा एवं सरल जीवन व्यतित करना चाहिये जिसमें दुषकार्यों हेतू कोई भी स्थान नही होना चाहिये। संतोष की भावना प्रत्येक मनुष्य में व्याप्त होना चाहिये तथा इसी भावना के साथ अपने जीवन का निर्वाह करना चाहिये।

   गुरूघासीदास का ध्येय सभी धर्मों के विपथगामियों को प्रेम व बंधुत्व के एक सूत्र में आबद्ध करना था इस कार्य हेतू बाबा द्वारा सतनाम पंथ की स्थापना की गयी। बाबा ने अपने शिष्यों को 7 सिद्धांत प्रतिपादित किया ताकि इन सभी उपदेशों को धारण कर मनुष्य अपने जीवन के अर्थ की वास्तविकता को समझ सके एवं शांतिप्रिय रूप से जीवन व्यापन कर सकें।

4. **माँस मंदिरा का सेवन नहीं करनाः** संत गुरूघासीदास ने अपने उपदेशों के माध्यम से सर्वगुण संपन्न बनाने हेतू एकता सद्भाव की ज्योति जलाई, उनका एक ही धर्म था जिसमें मानव सेवा, प्रेम–भावना, करूणा सम्मिलित थे जो बंधुत्व की प्रेरणा देते थे। सतनाम पंथीयों के लिये मांस–मंदिरा का सेवन निषेध था और मनुष्यों को सदैव शाकाहारी भोजन ही करना चाहिये। मांसाहारी भोजन पूर्णतः वर्जित था। बाबा के अनुसार खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार एवं किया कलापों में सदैव पवित्रता एवं शुद्धता होनी चाहिये गुरू द्वारा दिये गये मार्ग का अनुसरण कर सादा व सरल जीवन व्यतित करता है वह सभी परेशानी व तकलोफों से मुक्त हो जाता है यह संदेश मात्र एक मानव विशष या जाति विशेष के लिये न होकर सभी मानवों के लिये था और अनेक समुदायों द्वारा इस पंथ को स्वीकार किया गया एवं बाबा के विचारों को धारण व पालन व्यक्तियों द्वारा किया जाने लगा व साथ ही अध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने लगे।

5. **बलि प्रथा का विरोधः**संत गुरूघासीदास प्रकृति प्रेमी थे एवं उनके दृष्टि में सदैव प्रत्येक जीव समान थे चाहे वह मानव का रूप हो या जानवर का। वह सभी जीवों के प्रति करूणा, दया भावना व प्रेम भावना रखते थे वे पशुओं पर होने वाले अत्याचारों क प्रबल विरोधी थे यहॉ तक दोपहर में पशुओ को हल में जोतने के विरोधी थे उस समय फैली हुयी कुरूतियों का एक हिस्सा पशु बलि था जिसे लोगों द्वारा कई पाखंड मनोकामना पूर्ति हेतू मूक पशुओं का बलि दिया जाता था जिसका विरोध बाबा द्वारा किया गया। किसी भी जीव की हत्या करना पाप के समान है चाहे वह पशु हत्या हो या मानव हत्या। यह एक निंदनीय विषय था जिसे पूर्णतः बंद करने हेतू बाबा द्वारा प्रयास किया गया।

6. **स्त्री को समान अधिकार व सम्मान देनाः** संत गुरूघासीदास का स्त्री उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान रहा, उस समय व्याप्त प्रथांओ में बाल विवाह, सती प्रथा एवं स्त्रियों का शोषण, विधवा प्रताड़ना प्रमुख थे उन्होने प्रत्येक स्त्रियों को समान अधिकार व सम्मान देने को कहा तथा उनके द्वारा विधवा पुर्नविवाह हेतू प्रयास किया गया। उस समय व्याप्त समाजिक प्रथाएॅ एवं कुरूतियॉ व्याभिचार तथा रूढ़िवादिता का भारतीय नारी पर गहरा प्रभाव पड़ा एवं उन्हे कमजोर बनाने में मुख्य भूमिका रहा। नारियों को सदैव पुरूषों पर सदैव आश्रित बना दिया गया इस वजह से नारी अधिकारों का हनन होने लगा। सती प्रथा, बाल–विवाह इन सब कारणों से स्त्रियॉ कमजोर होने लगी एवं विशिष्टता एवं समाज में उनका स्थान हीन होते गया तब संत गुरूघासीदास द्वारा नारी के दशा के प्रति विचार किया एवं नारी उद्धार हेतू अनेक प्रयास किये ताकि नारी समाज में अपने आप को प्रतिष्ठित एवं अपना खोया सम्मान प्राप्त कर सके।

7. **वर्ण व्यवस्था का विरोधः**संत गुरूघासीदास बचपन से ही वर्ण व्यवस्था, कुप्रथा, छुआ–छुत, अंधविश्वास, पाखंड, मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे प्रत्येक प्रथा चाहे वह जो भी हो, जो एक मानव को दुसरे मानव में भेद बताती है उस प्रथा के घोर विरोधी थे। उस समय वर्ण व्यवस्था जारों से प्रचलित था जिसमें मनुष्यों को वर्ण व्यवस्था के आधार पर बांटा गया जिस कारण से उच्च वर्णों के लोगों द्वारा निम्न वर्णों के लोगों को हीन दृष्टि से देखा जाता था एवं उनका शोषण किया जाता था निम्न वर्णों के लोगा को धार्मिक व उनके सामाजिक कार्यों से दूर रखा जाता था। यहॉ तक मंदिरों, तालाबों में प्रवेश वर्जित था उच्च व निम्न की भावना इतनी अधिक व्याप्त थी कि निम्न वर्गों का अस्तित्व ही न था।

   जाति प्रथा का प्रारंभ मनुष्य के जन्म से ही प्रारंभ हो जाता था कि वह मनुष्य उच्च जाति से परिभाषित होगा या निम्न जाति से। संत गुरूघासीदास द्वारा समाज सुधार के प्रयास एवं भेद–भाव के उन्नमूलन हेतू अनेकों कार्य किया गया उन्होने मानव–मानव एक समान का संदेश प्रसारित किये जिसके अनुसार चाहे वह उच्च वर्ण का हो या निम्न वर्ण का, सभी मानव उनके लिये एक समान है। कोई किसी से छोटा या बड़ा नही होता। वर्ण व्यवस्था एक ऐसी प्रचलित व्यवस्था थी जिसके तहत किसी मनुष्य को दूसरे जाति में जाने की अनुमति नही थी यहॉ तक विवाह भी अपने जाति से किया जाता था अर्थात सजातीय विवाह प्रचलित था। इन सभी कारणों से बाबा नें वर्ण व्यवस्था का घोर विरोध किया।

   इसके प"चात् समाज सेवा का कार्य प्रारंभ किया, जिसके अनुसार सभी मानव के लिए असमानताएॅ एवं विषमताएॅ की स्थिति को समाप्त कर सभी मानव–मानव में समानता की भावना लाने हेतु प्रयत्न किए। वे सभी जातियो के लोगो के प्रति सद्भावना रखते हुए निम्न वर्गो के लोगो के प्रति समाजिक उत्थान का कार्य प्रारंभ किए, जिसके अनुसार मानव–मानव एक समान का संदे"ा प्रसारित किए।

II. साहित्य की समीक्षा–

अजय कुमार चंद्राकर " छ.ग. में अनुसूचित जाति की राजनितिक व्यवस्था में प्रभावषोलता सतनामी जाति की भूमिका में वि"ाष अध्ययन 1991" लेख के अनुसार– सतनामियों के प्रमुख स्थान गिरौधपुरी स्थल को बहुत प्रसिद्ध बताया और इसी वजह से राजनिति में भी प्रभाव पडने लगा और इन वर्गों के कुछ लोगों को सरकारी नौकरी में भी अवसर मिला। इनके अनुसार से सतनामियों को समाज में मिलकर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

विवेक सिंह चंदेल के अनुसार –"गुरु घासीदास वि"ववि"द्यायल के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के उच्च शिक्षा में ग्रंथालय की भूमिकाः 1983 से 1996 तक" लेख के अनुसार–अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों को ग्रंथालय में उच्च

शिक्षा प्राप्त करने की सुविधाओं पर प्रकाश डाला है और उनके द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्र, छात्राओं एवं प्रध्यापकों का अंशकालीन और नियमित आंकडो पर प्रकाश डाला है। और साथ–2 ग्रंथालय के विभिन्न सुविधाओं जो अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के वगों के लिये है उनका उल्लेख किया है।

अभय खलखो के लेख अनुसार –" छ.ग. के बंधुआ श्रम पर एक रिपोर्ट 2007" लेख के अनुसार– छ.ग. में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले का कुल प्रतिशत 43ः है। इनमें से कुल 57 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाल अनुसूचित जाति एवं आदिवासी हैं जो कि एक शर्मनाक बात है, अनुसूचित जाति में सतनामी जाति सबसे बड़ा समुदाय है जिसमें लगभग 70ः–80ःहैं। सतनामी आर्थिक रुप से कमजोर व पिछड़ी जातियों में जाना जाता है।

आसना सिंग के लेख अनुसार–"सतनामी आत्मजोर और दलित सक्रियताः ग्रामीण छ.ग. में रोजमर्रा की जिंदगी और जाति 2013" लेख के अनुसार– सतनामी समुदाय एक ऐसे ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते हैं जहॉ उनका खुद का धार्मिक स्थल रहता है। और इनके समुदाय में कुछ सतनामी अमीर और कुछ गरीब हैं। सतनामियों की खुद अपनी स्वतंत्र विचारधारा है। और विचारधारानुसार अपना जीवन निर्वाह करते हैं वह अन्य जातियों से स्वतंत्र विचारधारा रखते हैं एवं अपने धर्म का पालन करते हैं।

कमलनारायण जोगलेकर के अनुसार –"संत गुरु घासीदास एवं सतनाम पंथ का ऐतिहासिक अध्ययन 2015" लेखानुसार छ.ग. में सतनामी समाज के मार्गदर्शक एवं संत गुरु घासीदास बाबा माने जाते हैं। बाबा द्वारा लगभग 10 साल अपने उपदेशों का प्रचार किया। और उनके द्वारा बताया गयाकि सतनामियों के चार शाखाओं का भारतीय इतिहास में उल्लेख मिलता है, जिसे सतनाम पंथ के नाम से जाना जाता है। उन्होने गुरु घासीदास बाबा के महत्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त कार्यों का उल्लेख किया है। जैसे– बहुजन समाज के उद्धारक, मूर्तिपूजा पर विश्वास न करना और न मानना, बलि कार्यों पर रोक, नारी को सम्मान एवं समान अधिकार देने को संघर्ष, सभी मानव के लिये समानता की भावना एवं आत्मसम्मान के लिये संघर्ष।

संजीव कुमार मंजिरे के लेख अनुसार –"सतनामी समाज छ.ग. में चुनौतीपूर्ण ग्रामीण जाति संस्थान 2017" लेखानुसार सतनामियों का हिंदु से अलग सामाजिक संस्थान थे। जिस तरह से ब्राम्हण के पास पंड़ित होते हैं, उसी तरह सतनामियों के पास भण्डारो सतीदार होते थे, जो सतनामियों के सामाजिक कार्यों को संपन्न कराते थे जैसे– विवाह, मृत्यु, धार्मिक अनुष्ठान, नवजात शिशु के नामकरण एवं जन्मोत्सव कार्यों को संपन्न कराते थे। सतनामियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था एवं गांव में निवास करते थे। सतनामी समाज अनसूचित जाति के अंतर्गत आता है। अनुसूचित जाति छ.ग. में 12 प्रतिशत आबादी है जिनमे से 70 से 80 प्रतिशत सतनामी हैं। भारत में जातिवाद खतरनाक जहिल व्यवस्था है। मनुष्य का नीची जाति में जन्म होने से आगे जीवन भर भुगतना पड़ता है और कभी–कभी गरिमा भी खोना पड़ता है।

संजीव कुमार मंजिरे के लेख अनुसार –"गुरु घासीदास और भौतिक छ.ग. ब्राम्हणों को चुनौती 2017" लेख के अनुसार– बिम्बा जी भोंसले के शासन में हर तरह से स्थानीय लोगों का शोषण हुआ और सभी अपने जीवन से परेशान एवं बिखर गये। गुरु घासीदास बाबा का जन्म इसी बुरे युग में हुआ। मानव समाज के बीच अत्याचार प्रचलित था और इसी समय मानव समाज को दो भागों में बांटा गया। यह ऊॅच और नीच, पवित्र व अशुद्ध में बांटा गया। इस समस्या को हल करने हेतू 6 माह का तपस्या करने के बाद लौट आये और उनके द्वारा प्रचार करना शुरु किया गया कि सब मानव एक समान हैं अर्थात सभी मानव बराबर हैं। उनके द्वारा अन्य चीजों को प्रतिबंधित भी किया, जैसे– मॉस खाना, शराब पीना, जुआ खेलना,चोरी करना, असत्य बोलना, किसी जीवित प्राणी को न मारना। उनके विश्वास वास्तव में हिंदु धर्म के विपरित थे जहॉ उन्होने हर इन्सान को बराबरी से देखने को कहा।

कुमार अवधेष के अनुसारः–"छ.ग. में कबीर और सतनामी आंदोलन का तुलनात्मक अध्ययन" लेख के अनुसार– सतनामी का मुख्य स्थल भण्डारपुरी, तेलासी एवं गिरौधपुरी सतनामियों का प्रमुख स्थल है एवं प्रमुख आंदोलन सतनामी व कबीरपंथी आंदोलन का वर्णन किया गया है जिस आंदोलन के कारण कुछ लोग गांव छोड़कर चले गये एवं कुछ को जान गवानी पड़ी।

लेखकों ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के रहन–सहन व खान–पान, पूजा–पाठ एवं समाजिक कार्यों का उल्लेख किया है। लेखकों द्वारा कहा गया कि सतनामी जाति एक पिछड़ी जाति के अंतर्गत पाया गया है जिनका मुख्यतः प्रतीक चिन्ह जयस्तम्भ है। जयस्तम्भ के शीर्ष पर सफेद ध्वज लहराता है जो कि सत्यता का प्रतीक है।
लेखकों ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के गुरु शिष्य के पद्धति का वर्णन किया है सतनामी समाज में गुरु को वि"ाष दर्जा प्राप्त है। गुरू के आगमन के सम्मान में उनके शिष्यों द्वारा गुरू को गद्दी में बैठाकर चरण धोकर नमन करते हैं। गुरु शिष्य की परंपरा वंशानुगत चलते रहता है।
लेखकों ने अनुसूचित जाति के विशेष अवसर पर चौका पूजा में गुरु घासीदास बाबा के जीवन का वर्णन, उपदेश, सिद्धांतों को कथा के रूप में बताया जाता है तथा सतनामी समुदाय के लोकनृत्य पंथी पर प्रकाश डाला जाता है। पंथी नृत्य में महिला व पुरूष समान रूप से भागीदारी कर सकते हैं।

III. सतनामियों की सामाजिक सांस्कृतिक जीवन

सतनामियों का रहन–सहन एवं विचार :–

बाबा गुरूघासीदास के अनुसार सतनामी (सतनाम पंथ मार्गी) का रहन–सहन बड़ी ही सादगी व शांतिप्रिय, एवं सरलता से जीवनयापन करते हैं। और कभी भी छल कपट नहीं करते हैं। एक–दूसरे पर विश्वास रखते हैं। सतनामी व्यक्तियों की शारीरिक बनावट सुंदर होता हैं। शरीर का होते हैं। स्वभाव में बडत्री ही सरलता भाव होता हैं। एवं सदैव सत्यता पर विश्वास रखते हैं। इनकी भाषा छत्तीसगढ़ी होती है, एवं मानवता में सहजता, विनम्रता का गुण विद्यमान होता हैं। इनका घर मिट्टी एवं ईंट पत्थर का बना हाता हैं एवं प्रायः सतनामियों के घर के आँगन पर जैत खाम की स्थापना किये रहते हैं। जो सतनामियों का धार्मिक प्रतीक चिंह जो सतनाम पंथमार्गियों के लिए विशष महत्व व पूजनीय होता हैं। इनकी भाषा सरल एवं छत्तीसगढ़ी बोली का प्रयोग करते हैं। मुख्यतः अनुसूचित जाति के

श्रेणी में सतनामी जाति को रखा गया हैं। जिसके तहत् संविधान में आरक्षित वर्ग के भीतर रखा गया हैं। सतनामी जाति के कुछ अपनी व्यवस्था हैं। जिसके कारण कुछ निषध एवं वर्जित माना जाता हैं। जैसे–मंदिरो एवं मूर्तियो का पूजा करना, उनके अनुसार सतपुरूष अर्थात् निराकार परमेश्वर जो स्वयं सतपुरूष की आराधना करते हैं। गुरू प्रथा प्रधान होता हैं। गुरूओं को वि"ोष स्थान दिया जाता हैं। अतिथियों को भगवान के समान पूजनीय एवं सम्मान दिया जाता है। समगोतीय विवाह वर्जित हैं लेकिन अंतर्जातीय विवाह पर रोक नहीं हैं। लेकिन एक ही गोत्र में विवाह नहीं किया जा सकता हैं। क्योंकि वे पारिवारिक रि"ता से जुड़ा रहता हैं। सतनामियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि हैं और कृषि कार्य करने से समुदाय के लोगों में प्रसन्नता रहती है। वे अपने खु"ाी से कृषि कार्य करते हैं। एवं अपने खु"ाी से कृषि कार्य करते हैं। एवं अपने जीविका का निर्वाह करते हैं। ि"ाक्षा के क्षेत्र में भी बहुत संख्या में लोगों द्वारा आगे बढ़ा जा रहा है। जिससे बड़े–बड विभाग में कार्यरत हैं। जैसे– इंजीनियर, डॉक्टर, ि"ाक्षक, वकील, ससद, विधायक इत्यादि। सतनामियों के अपने कुछ नैतिक नियम हैं जिसे पालन करते हैं जैसे–सतपुरूष की उपासना करना। सतनामी जाति के लोग कंठी धारण करते हैं। एवं जनऊ पहनते हैं एवं सतनाम का जाप करते हैं। किसी भी प्रकार के मंदिरों (मूर्तिपूजा) नहीं करते हैं। केवल परमपिता परमे"वर सतपुरूष को ही मानते हैं। एवं अपने जीवनयापन खु"ाी से करते हैं। स्त्रियों के विवाह के सम्बन्ध मे केवल एक ही बार मड़वा विवाह का प्रावधान हैं परन्तु विधवा स्त्रियों का पुर्नविवाह एवं तलाकषदा स्त्रियों को भी विवाह की छूट हैं।

बच्चे के जन्म के छठे दिन छठी मनाया जाता हैं। और दिन बच्चे के बाल का मुंडन किया जाता हैं। एवं इस अवसर पर पूरे परिवार एवं समाज के व्यक्तियों को भोजन हेतु नियंत्रण कर खु"ाी से छठ्ठी कार्य सम्पन्न किया जाता हैं। सतनामियों का प्रमुख दिवस 18 दिसम्बर हैं, इस पावन अवसर को बड़े धूम–धाम से त्यौहार मनाते है। 18 दिसम्बर के अवसर पर प्रत्येक घर के परिवारों मे बच्चों के नये कपड़े खरीदते हैं एव मिठाई बनाते हैं। वि"ाष रूप से खीर, चीला बनाया जाता है एवं घरो के बाहर सुंदर रंगोली बनाते हैं। एवं दीपक जलाया जाता है जिसकी रो"ानी शाम समय में पूरे शहर व गाँव को जगमग कर देती हैं। और एक –दूसरे के घर जाकर गुरू के अवतरण दिवस के पावन पर्व की बधाई देते हैं प्रत्येक घर के लोगों द्वारा गुरू में श्री फल, एवं सफेद कपड़ा चढ़ाते हैं। एवं सुंदर पु"प का माला बनाकर गुरू को पहनाते हैं। सतनामी जाति के लोग जातिप्रथा एवं छुआछूत को नहीं मानते एवं इन प्रथाआ पर विष्वास नहीं करते हैं। वह मानव–मानव को समान समझते हैं उनके अनुसार सभी मनु"य समान हैं कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता है।

ऊँच–नीच तो बनाया गया सामाजिक व्यवस्था हैं जिसे स्वयं मनु"य द्वारा ही बनाया गया हैं। और इन सभी प्रथाओं के घोर विरोधी थे। अभिवादन करते समय एक–दूसरे को जय सतनाम कहते हैं एवं बड़ो द्वारा अपने से छोटो को साहेब सतनाम कहकर आ"ाीवाद देते है। इनके पास अपने सामाजिक कार्यो के लिए खुद के समाज छड़ीदार हाता है। जो इनके सामाजिक कार्य जैसे– विवाह, जन्म मृत्यु सभी कार्यो का संपादन करता हैं। यह व्यक्ति वि"ाष, ज्ञानी एवं अनुभवी एवं प्रति"ठत व्यक्ति होता है। छड़ीदार को समाज में वि"ाष दर्जा दिया जाता हैं। छड़ीदार अपने कार्यो को पूरी ईमानदारी से करता हैं। एवं किसी भी कार्य को नियम से विपरीत नहीं करता हैं। परन्तु अगर नियम के विपरीत एवं समाज के खिलाफ कार्य करने पर उन्हें अनेक पद से निर्वासित कर दिया जाता है।

छड़ीदार को कुछ न्यायिक अधिकार प्राप्त होता है। जिसके तहत ग्राम के परिवारो के आपसी विवाद होने पर उनके समस्याओं को सुलझाने एवं निवारण करने हेतु प्रयास करते हैं एवं उनके द्वारा दिये गये फसलें को लोग सम्मान के साथ स्वीकार करते हैं। गुरूप्रथा का प्रचलन हैं जिसमें गुरू को प्रमुख स्थान एवं दर्जा दिया जाता हैं। ऐसी भी मान्यताये प्रचलित हैं कि गुरू के बिना जीवन अधुरा होता हैं। अर्थात् प्रत्येक को गुरू बनाना चाहिये। क्योंकि गुरू के बिना ज्ञान प्राप्ति नहीं हो सकती हैं। इसलिए प्रायः व्यक्तियों द्वारा गुरू बनाया जाता हैं। जब गुरू, अपने ि"ा"य के घर जाते हैं। तो गुरू के सम्मान का वि"ाष तैयारी किया जाता है। ि"ा"यों द्वारा अपने गुरू को बड़े ही आदर–भाव से स्वागत करते हैं। एवं एक थाली में जल रखकर गुरू के चरण को स्पर्ष करते हुए गुरू चरण को स्नान कराते हैं। उसके उपरांत गुरू को प्रणाम कर आ"ाीष प्राप्त करते हैं।

सर्वप्रथम गुरू को भोजन कराते हैं। तत्पष्चात् फिर अन्य लोगों अर्थात् सर्वप्रथम भोजन गुरू अर्पित किया जाता हैं।

वैवाहिक स्थिति के संदर्भ में देखा जाये तो दहज प्रथा के विरोधी होते हैं। विवाह करने पर वधु द्वारा वर पक्ष कुछ भी मूल्य की माँग नहीं रखते हैं। अगर दहेज की माँग रखते करते है तो कन्या के पिता द्वारा शादी अर्थात् विवाह को मना कर दिया जाता है। परन्तु कन्या के पिता अपनी पुत्री को अपने स्वयं इच्छानुसार उपहार स्वरूप कुछ देते हैं। परन्तु यह अनिवार्य नहीं हैं।

01. खान–पान एवं वस्त्राभृशण :–

सतनाम पंथ के लोगों द्वारा सादा भोजन किया जाता है। सादा से तात्पर्य शाकाहारी भोजन से हैं। प्रमुखतः सतनामियों द्वारा, दूध, दही, रोटी, चावल, दाल, चना, फल एवं हरी सब्जियों का सेवन किया जाता हैं। कुछ व्यक्तियों द्वारा तो ब्याज वह लहसुन, का सेवन नहीं करते हैं। मांस–मंदिरा का सेवन नहीं करते हैं। एवं मसालों का भी कम प्रयोग करते हैं। प्रायः शाम का भोजन सूर्य सूर्यास्त के बाद कर लिया करते हैं। इनकी वे"ाभृषा साधारण होती हैं। स्त्री–साड़ी, सलवार श्ट, पहनती हैं। स्त्रियो द्वारा कान, गला, नाक, हाथ, पैर व कमर में आभृषण पहनते हैं। कुछ महिला गोदना गोदवाते हैं। पुरूष पेंट, शर्ट, धोतो, पहनते हैं। सफेद इनका प्रिय पोषाक है।

भोजन के पहले गुरू वंदना किया जाता हैं। एवं नमन करते हुए सर्वप्रथम धरती पर कुछ भोजन के दाने एवं पानी अर्पित कर धरती माता को प्रणाम कर आचमन कराके भोजन करना प्रारम्भ करते हैं। कुछ वि"ाष त्यौहार मनाया जाता है जैसे– तीज, होली, रक्षाबंधन, हरेली आदि इन वि"ाष अवसरो पर छत्तीसगढ़ी का वि"ाष व्यंजन जैसे – बड़ा, चीला, सोहारी, ठेठरी, तमसई, भजिया, पपची आदि बनाया जाता हैं।

02. विवाह :–

विवाह के योग्य के होने पर युवक एवं युवतियों का विवाह किया जाता हैं। प्रत्येक धर्म समुदाय का अपने–अपने अनुसार से विवाह का नियम व संस्कार सम्पन्न कराया जाता है। उसी प्रकार सतनामियों में समगोत्र विवाह वर्जित व निषध होता हैं एवं एक ही रिष्तेदार के यहाँ भी वैवाहिक सम्बन्ध नहीं बनाया जाता हैं एवं विवाह के लिए वर वधु की खोज करते हैं और योग्य वधु मिल जाने पर वह एक–दूसरे स्वीकृति हो जाने पर वर पक्ष के द्वारा वधु को कुछ निष्चित रा"ाि या कुछ आभृषण दिया जाता हैं जिससे सगाई की रस्म पूर्ण हो जाती है। सतनाम धर्म के अनुसार विवाह में अगर वर पक्ष के द्वारा दहेज की माँग की जाती है वधु पक्ष के तरफ से विवाह करने को सक्त मना कर दिया जाता है अर्थात् सतनाम धर्मवालम्बियों दहेज प्रथा के विरोधी होते हैं वह एक गुणी व आद"ावादी वधु

की चाह रखते हैं। विवाह संस्कार करते समय कुछ वैवाहिक रस्म होते हैं और उसी के अनुसार वैवाहिक कार्य को सम्पन्न कराया जाता हैं विवाह मुख्यतः कार्यक्रम तीन दिवसीय होता हैं। जिसमें बहुत सारे रस्म होते हैं जो निम्नानुसार हैं :–

03. जैतखाम :–

जैतखाम सतनाम पंथ–मार्गियो का प्रतीक चिन्ह हैं। जिसे प्रकार प्रत्येक धर्म समुदाय का प्रतीक चिन्ह होता हैं। जो उस धार्मिक मनु"यो के लिए आवष्यक तत्व माना जाता हैं। जैतखाम (सरई) साल वृक्ष के लकड़ी का बना होता है। जैतखाम का आकार गोल व ऊँचाई 31 फीट का बना होता है। जैतखाम में सफेद रंग का प्रयोग किया जाता है रंग 'ांति व सात्विक जीवन के महत्व को द"ार्ाती हैं। जैतखाम को बाबा गुरूघासीदास द्वारा सम्पूर्ण जगत के निवासियों के लिए सर्वप्रथम गिरौदपुरी धाम में स्थापित किया गया। जिससे सम्पूर्ण जगत में एकता, अखण्डता, मानवीय भाईचारा की भावना प्रबल हो सके। प्राचीन समय से ही सतनाम पंथमार्गियो के घर के आँगन में जैतखाम की स्थापना किया जाता है। सतनामियों द्वारा प्रतिवष 18 दिसम्बर के पावन अवसर पर हर्षाउल्लास के साथ ध्वजा फहराया जाता हैं एवं जैतखाम की पूजा करते हैं।

जैतखाम के धार्मिक संदेश :–

तखाम में निम्न धार्मिक संदे"ाों का समावे"ा हैं जो प्रत्येक मनु"यों को ज्ञान देती हैं।

01. सद्मार्ग, सतकर्म पर चलना।
02. मानव सेवा ही सच्चा धर्म हैं।
03. सभी धर्मो का सम्मान करना।
04. सद्वाणी, सत्यवचन बोलना।
05. स्वहित हेतु दूसरों का अहित न करना।
06. सतनाम शब्द को मन में वास करना।
07. रूढ़िवादिता, बाह्यआडम्बरों का त्याग करना।
08. सतनाम नाम का प्रचार–प्रसार करना।

जैतखाम के भाब्द :–

जैतखाम अमरलोक से आई, एक्कीस हाथ की लम्बाई में तीन हुक लगवाई, पांच हाथ ट्ण्डा हैं भाई। ट्ण्ड में 'वेत झण्डा लगाई घी की जोत वहां जलाई अमृत बनाके संतन पिलाई, तब संत अमरपद पाई।
साहेब गुरू सतनाम।।

जैतखाम शब्द से आ"ाय हैं कि जैतखाम की स्थापना पृथ्वी से नभ से सम्पूर्ण ग्रह, नक्षत्र, दि"ाा, तारा, रा"ाी सभी के समाहित से हुई हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मनु"य का शरीर का प्रकृति के सभी तत्वों को मिलाकर हुआ है उसी प्रकार जैतखाम की सभी तत्वों से समावे"ा से बना है। जैंतखाम की लम्बाई 21 हाथ अर्थात् 31 फीट होता हैं। जैतखाम के शोष पर 3 हुक लगा हाता हैं। जिसमें बांस का डंडा लगाया जाता हैं जिसकी लम्बाई पांच हाथ अर्थात् 7 फीट के लगभग होता हैं। जैतखाम के शोष पर सफेद ध्वज फहराया जाता हैं, एवं ध्वजारोहण के पष्चात् दीपक प्रज्वलित किया जाता है। तथा गुरू के द्वारा जल से अमृत बनाया जाता है। जो सभी संतो में द्वारा अमृत रूपी जल को ग्रहण कर सतनाम रूपी शब्द को प्राप्त कर लेता हैं।

सतखाम का भााब्दिक अर्थ पाँच तत्वों से मिलकर बना है :–

1. पंच"ाील – अग्नि, वायु, जन्म, नभ, पृथ्वी।
2. पंच पिता – सत्य, अहिंसा, परोपकारी, निस्पार्ध, धर्मार्ध।
3. पंच गण – चुने हुए पाँच परमेष्वर पाँच वाणी होते है।
4. पंचामृत – नीर, झीर, दधि, मधु, तुलसी।
5. पाँच सुख – नारी, फक्ष, ऋण, धन, वैभव।

जैतखाम के पाँच भाग :–

जैतखाम को पाँच भागों में विभाजित किया गया है। जिसके अनुसार निम्नलिखित है।

1. सफेद ध्वज
2. खम्बा
3. चतुबरा
4. हुक
5. बासं का डंडा

01. **सफेद ध्वज** :– जैतखाम के ऊपरी शोष पर सफेद रंग का झण्डा चढ़ाते हैं। जो सफेद रंग शांति व सत्यता का प्रतीक माना जाता है। जो हमें यह सीख प्रदान करता है, कि शांति पूर्ण से जीवन–यापन करना एवे दूसरों के प्रति हित की भावना रखना और सत्यता के मार्ग को धारण करके मानव–मानव एक समान के संदे"ा को ग्रहण करना।
02. **खम्बा** :– यह एक सरई लकड़ी का धना होता हैं जिसकी लम्बाई 31 फीट का होता हैं। जो गोल व चिकनाई युक्त बनाया जाता हैं। खम्बे में सफेद रंग का पालि"ा लगाया जाता है। खम्बा मुख्यतः सतनाम धर्म वासियो का एकता, अखण्डता, विष्वनीयता भाईचारे का प्रतीक माना जाता है। जिस प्रकार खम्बा अपने रचान पर अडिग खड़ा होता हैं। उसी प्रकार मनु"यों को हर परिस्थितियों में सत्यता के मार्ग पर अड़िग खड़ा रहने का संदे"ा देता हैं। और समाज के व्यवस्था के अनुसार चलना एवं सभी दु"कर्मो का त्याग कर, सत्य रूपी आभृषण को धारण करने का मार्ग बताती है।
03. **चतुबरा** :– चतुबरा मुख्यतः सीमेंट पईट का बना होता हैं। इसका आकार चाकौन होता हैं। पंरतु आकार के सम्बंध पर किसी प्रकार नाप नहीं है। इसे अपने इच्छानुसार बनवाया जाता हैं। चतुबरा सफेद रंग का ही बनाया जाता हैं। यह

सतनाम पंथ मार्गियों का विष्वास प्रतीक चिंह है। चतुबरा में प्रतिदिन दीपक जलाकर पूजा किया जाता हैं एवं श्रीफल व अगरबत्ती, ज्योति, कल"ा से भी पूजा की जाती हैं। एवं 18 दिसम्बर के अवसर पर चतुबरा के चारो ओर दीपक प्रज्जविलत किया जाता हैं एवं तोरन से सजाया जाता है। चतुबरा प्रमुखताः सतनामियों मोहल्लों मं स्थापित किया जाता है। जो सार्वजनिक हैं जिसे कोई भी मानव जैतखाम की पूजा कर सकता है।

04. **<u>बासं का डंडा</u>** :– डंडा बांस लकड़ी का बना होता है। जो लगभग 7 हाथ अर्थात् 11 फीट लम्बा होता है। डंडा को हुक के बीच में फँसा कर लगाया जाता हैं। बास का डंडा चिकना होता है एवं यह भी सफेद रंग का होता है और गोलाकार आकार का होता हैं।

यह मुख्यतः मानव को एक–दूसरे के सच्चे भाव से सेवा करने की सीख देती है। एवं प्रेम, दया, करूणा, क्षमा यह सभी भाव मानव के भीतर धारण करके परोपकारी कार्य करने को सीख देती है।18 दिसम्बर गुरूपर्व के पावन अवसर पर अर्थात् गुरूघासीदास बाबा जी के जन्म दिवस के अवसर पर जैतखाम ने प्रतिवर्ष धूम–धाम से भव्य समारोह का आयोजन किया जाता हैं। एवं पंथी नृत्य का आयोजन कर गुरू"ाब्दवाणी, गुरू की महिमा का वर्णन कर जयंती मनाया जाता हैं। जैतखाम के पास सभी मनु"्य एकत्रित होकर जैतखाम की पूजा करके ध्वज (झण्डा) चढ़ाते हैं। एवं जो मनु"्य सतनाम पंथ धम के मार्ग को स्वीकार कर लेता हैं वह अपने घर के आँगन में जैतखाम की एवं गुरूगरी की स्थापना कर बाबा का ध्यानपूर्वक पूजा करते हैं। बहुतो द्वारा जोड़ा जैतखाम गड़ाया जाता हैं परन्तु ऐसी मान्यता प्रचलित हैं कि जोड़ा जैतखाम उसी मनु"्य द्वारा गड़ाया जाता है, जो पूणतक शाकाहारी एवं मांस–मदिरा का सेवन नहीं करता हो, जो पूर्णतक त्याग चुका हो एवं जो हिंसा चोरी दुर्गजो, दु"कर्मो से दूर रहता हो वही जोडा जैतखाम की स्थापना करता हैं।गिरौद्रपुरी धाम में जहाँ बाबा के जन्म–रचान पर 72 फीट की ऊँचाई पर बहुत सुंदर एवं भव्य जैतखाम बनाया गया हैं। जो कुतुबमीनार से भी ऊँचा हैं।

05. **<u>पंथी नृत्य</u>** :–

पंथी नृत्य सतनाम पंथ के लोगों द्वारा किया जाता है। पंथी नृत्य करते समय पिरामिड बनाते है। पंथी नृत्य की शरूआत करने से पहले गुरू घासीदास बाबा की स्तुति करें एवं सतनाम की जयकार लगा के, एक गोल घेरा बनाकर पंथी नृत्य शरू किया जाता हैं। पंथी नृत्य बाबा गुरूघासीदास जी के जन्म के अवसर पर प्रत्येक वष 18 दिसम्बर के दिन भव्य समारोह का आयोजन किया जाता हैं। जिस अवसर पर सतनाम पंथ के लोगों द्वारा पंथी नृत्य प्रस्तुत किया जाता हैं। पंथी नृत्य करने वालों सदस्यों की संख्या लगभग 15 होती हैं। यह पुरूषों द्वारा किया जाने वाले नृत्य हैं। पंथी नृत्य सतनाम समुदायों के लोगों का आध्यात्मिक एवं धार्मिक नृत्य हैं। इस नृत्य द्वारा बाबा जी महिमा, गुरूवाणी, प्रसार किया जाता हैं। पंथी नृत्य सायं वाली नमें जैतखाम समीप किया जाता हैं। छ.ग. के प्रमुख सांस्कृतिक नृत्यों में पंथी नृत्य को प्रमुख दर्जा दिया गया हैं। पंथी नृत्य के प्रमुख व्यक्ति देवदास बंजारे हैं जिसे दे"ा–विदे"ा ख्याति प्राप्त हो पंथी नृत्य छ.ग. का स्फूर्ति नृत्यों में से एक हैं। पंथी नृत्य करते समय वे"भूषा प्रायः सफेद धोती पहना जाता हैं। एवं ऊपर जनेऊ धारण किया जाता हैं। माथे पर सफेद रंग का तिलक लगाते हैं। एवं पॉव में घुघँरू बँधे हुये रहते हैं। जिससे नृत्य करते समय मधुर ध्वनि निकाली हैं। लगे में कंठी माला पहना जाता हैं। पंथी नृत्य के माध्यम से, आध्यात्म भाव, शौर्य पराक्रम, धर्मोदे"ा की भावना, एवं चरित्र कथा के साथ पंथी गायन के साथ नृत्य प्रस्तुत किया जाता हैं। पंथी नृत्य करते समय प्रमुख वाध यंत्रों का होना आवष्यक है जैसे–झांझ, मंजीरा, झुमका, मादर प्रमुख वाधयंत्र हैं।

यह नृत्य पूर्णतः बाबा गुरूघासाजी के जीवन पर आधारित होता हैं। एवं उनके द्वारा दिये गये उपदे"ाों का पूर्णतः वर्णन किया जाता हैं।

06. **<u>चौका पूजा की साम्रगी</u>** :–

सूखा नारियल व बंगला पान, 'वेत रंग का पसन धोती, चावंल आटा, गेंहुँ आटा, गुड़–"ाक्कर, काजु–कि"ामिष, लौंग, बादाम, घी, दुध, तेल, काली मिर्च, कपूरा, दिया सलाई अगरबत्ती, धागा, कपास, चंदन, दिया सिलाई खोभरा कंठीमाला, पूंगीफल इत्यादि।

<u>चौका</u> :–

चौका पूजा विधि सतनामी पंथमार्गियों का पूजा विधि है। जिसमें बाबा गुरूघासी दास के जीवन के चारित्रिक घटनाओं का वर्णन किया जाता हैं। चौका पूजा मुख्यतः 7 से 8 घंटे तक की जाती हैं। इसके माध्यम से बाबा गुरूघासीदास के उपदे"ा, सिद्धांत, ज्ञानमार्ग गुरूवाणी आदि बताया जाता हैं। चौका पूजा विधि करने के पीछे सतनाम पंथमार्गियों का विष्वास होता है कि इसे करने से घर में सुख–"ाांति की प्राप्ति होती हैं। सभी क"ट, विपत्ति, उलदाण, दुख सभी दूर हो जाते हैं। कईयों के द्वारा इसे मन्नत अर्थात् मनोकामना की पूर्ति हेतु किया जाता है। चौका पूजन में मंगल गीत, गाया जाता हैं। जो बहुत प्रिय होता हैं। घर में शभ कार्यो के उपलक्ष्य में या दुखतः परिस्थितियों में चौका पूजन किया जाता ह। चौका पूजन सबसे ज्यादा 18 दिसम्बर जो कि गुरू पर्व के अवसर पर या पूरे दिसम्बर माह में चौका पूजा किया जाता हैं। परन्तु ऐसी कोई मान्यता नहीं कि चौका पूजा सिर्फ दिसम्बर में किया जाता हैं। इस सतनामपंथमार्गियों किसी भी समय आयोजन कर सकते हैं।

चौका पूजा मुख्यतः गुरू द्वारा किया जाता हैं अर्थात् जो धर्म समुदाय का प्रमुख एवं गुरूवाणी का ज्ञानी होता हैं। जो सभी अपने ि"ा"यों को बाबा के गुरूवाणी को प्रसार–प्रचार लोगों के बीच प्रसारित करते हैं। चौका पूजा मुख्यतः सात से आठ लोगों द्वारा किया जाता हैं। जिसमें प्रमुख एक गुरू होता हैं। जो गुरूगद्दी में बैठता हैं। जो चौका पूजा को सम्मन्न कराते हैं। चौका पूजा का प्रमुख वाधयंत्र, झांझ, तबला, हारमुनियम, आदि का प्रयोग किया जाता हैं। चौका पूजा करते समय गुरू व उनके ि"ा"यों द्वारा 'वेत वस्त्र धारण किये रहते हैं। एवं सिर पर सुदंर सफेद वस्त्र का पगड़ी धारण किये कहते हैं। चौका दौरान गुरू सभी लोगों का ज्ञान को धारण कर मानव जीवन को उन्नत बना सके। इसमें आरती गीत गाया जाता हैं। जिसमें स्त्रीयों द्वारा आरती किया जाता हैं फिर पुरूषों द्वारा भी किया जाता हैं। यह मन को मोहित कर लेने वाली पूजा विधि हैं। जिसमें हृदय में सत् का ज्ञान संचारू होता हैं।

प्रमुखतः यह बाबा गुरूघासीदास के जीवन को सभी घटनाओं को क्रमबद्ध वर्णन किया जाता हैं। बाबा के जन्म से लेकर अद्वितीय अवस्था तक समुग जीवन एवं बाबा द्वारा किये गये सामाजिक कार्य, चमत्कारिक कार्यों का वर्णन किया जाता हैं। इसका

सतनाम धर्मोपलंपी में इसका वि"ाष महत्व हैं। इसके द्वारा बाबा का स्मरण एवं ध्यान लगाकर अपने पितू में बाबा के सिद्धांतों एवं उपदे"ाों का विस्तार किया जाता हैं।

सतनामियों का प्रतीक चिन्ह ऊँ

ऊँ (ओम) शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना हैं, जिसमें 1. अ 2. उ 3. म हैं।

01. अ का अर्थ है – आत्मपरायणता शरीर के वि"ायों से मन को हटाकर आत्मानंद में रमण करना।
02. उ का अर्थ – उन्नवि, अपने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, आत्मिक, सम्पत्तियों से सम्पन्न करना।
03. म का अर्थ है – महानता, क्षुद्रता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, इंडिय। को छोड़कर प्रेम, दया, उदारता सेवा, त्याग, संयम, एवं आर्द"ा के आधार पर जीवन यापन की व्यवस्था बनाना।

ऊँ शब्द सतनामियों का प्रतीक चिन्ह हैं, जिसे सतनाम धर्म लोगों का स्वाभिमान बढ़ता हैं, एवं आत्महीनता की समाप्ति होती हैं एवं अपने धर्म के प्रति विष्वास एवं प्रेरणा की बढ़ोत्तरी होती हैं, यह शब्द के उच्चारण से ही जागृति की दि"ाा की लहर पैदा होती हैं, एवं इस चिन्ह के माध्यम से अपने धर्म को सरलता से व्यक्त करते हैं, एवं चिन्ह के माध्यम से धर्म स्थापना के प्रयास को बल मिलता हैं।

सतनामियों में गुरू प्रथा का प्रचलन :–

गुरू एक चैतन्य शक्ति है जो प्रका"ा के समान होती हैं, जो मार्ग का दि"ाा निर्धारित करती हैं अपने ि"ा"यों के लिए गुरू के तीन अंग महत्वपूर्ण होती हैं।

1. आँख :– आँख जो सदकर्म का राह दिखाती हैं।
2. मुख :– मुख से आ"ार्वाद एवं ज्ञान देते हैं।
3. चरण :– चरण से अभिमान का त्याग होता हैं।

गुरूओं के विशि"ट गुण :–

1. गुरू भक्ति भाव से पूर्व हो।
2. धर्मग्रंथ को समझने और समझाने वाला हो।
3. समदृ"िट हो।
4. ईष्वर को प्राप्त करने वाला हो।

प्टण् अनुमानित परिणाम–

1. बाबा गुरू घासीदास के समाज सुधार कार्यों का बोध होना।
2. बाबा गुरू घासीदास के उद्देश्यों को बहुत से लोगों द्वारा अनुसरण कराना।
3. गुरू घासीदास बाबा द्वारा किये गये कार्यों को लोगो तक पहुँचाना।
4. सामाजिक उत्थान के कार्य में बाबा गुरूघासीदास का एक वि"ाष योगदान के महत्व से अवगत कराना।
5. स्वतंत्र चेतना के सृजन हेतु वि"ाष प्रयास जिसमें प्रमुखता मानव–मानव एक समान के संदे"ा का प्रचार –प्रसार करना। जिससे असमानता की भावना का परित्याग हेतु वि"ाष प्रयास कर सके।
6. बाबा के सिद्धांत, उपदे"ा, ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को स्वीकार कर अपने मानव रूपी जीवन का उद्धार करना।

Acknowledgment

किसी भी कार्य की सफलता किसी एक व्यक्ति के प्रयास का प्रतिफल नहीं हो सकता है। मेरे शोध कार्य में मेरे प्रयास के अविरिक्त जिनका अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके प्रति आभार व्यकत करना चाहती हूँ। सर्वप्रधम मैं उपने मार्ग निर्देषक अद्धेय श्रीमान डां. रामरतन साहू के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिनके मार्ग द"ान एवं स्नेहिल व्यवहार के जलस्वरूप इस लघु शोध को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. अजय कुमार चंद्राकर "छ.ग. में अनुसूचित जाति की राजनितिक व्यवस्था में प्रभाव"ालता सतनामी जाति की भूमिका में वि"ाष अध्ययन 1991"
2. विवेक सिंह चंदेल –"गुरु घासीदास वि"ववि"द्यालय के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के उच्च शिक्षा में ग्रंथालय की भूमिकाः 1983 से 1996 तक
3. अभय खलखो –"छ.ग. के बंधुआ श्रम पर एक रिपोर्ट 2007"
4. आसना सिंग "सतनामी आत्मजोर और दलित सक्रियताः ग्रामीण छ.ग. 2013"
5. कमलनारायण जोगलेकर के अनुसार –"संत गुरु घासीदास एवं सतनाम पंथ का ऐतिहासिक अध्ययन 2015"
6. संजीव कुमार मंजिरे के लेख अनुसार –"सतनामी समाज छ.ग. में चुनौतीपूर्ण ग्रामीण जाति संस्थान 2017"
7. संजीव कुमार मंजिरे के लेख अनुसार –"गुरु घासीदास और भौतिक छ.ग. ब्राम्हणों को चुनौती 2017"
8. कुमार अवधेष के अनुसारः–"छ.ग. में कबीर और सतनामी आंदोलन का तुलनात्मक अध्ययन
9. एंडरसन, आर। माइकल और गुहाएस (एड्स।) (1 99 8) दक्षिण ए"िाया मेंराइटिंग कॉन्सेप्ट्स ऑफ राइट्स एंड जस्टिस नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस।
10. एंथनी, एमजे (2000)दलितअधिकारः अनुसूचितजाति/अनुसूचितजनजाति/पिछड़ा वर्गो पर लैंडमार्क निर्णय नई दिल्लीः भारतीय सामाजिक संस्थान।

11. टनिता, एस। (2002) डोमिनेंटग्रंथ, उपनगरीयप्रद"ानः मध्य भारत में रामायण के दो कहानियां पीएचडी, एसओएएस, लंदन विष्वविद्यलय।
12. अर्नोल्ड, डी। और ब्लैकबर्न, एक। (एड्स।) (2004) टेलिंगलाइव्सइनइंडियाः जोवनी,आत्मकथा और जीवन इतिहास नईदिल्लीः स्थायीब्लैक।
13. बाब,एल। (1 9 72) दसतनामिस – राजनीतिक भागीदारी का एकधार्मिक आंदोलन में महार, एमजे (एड।) अनौपचारिक समकालीन भारत एरिजोनाः एरिजोना विष्वविद्यलय प्रेस।
14. बाब, लॉरेंसए। (1 9 75) डिवाइनपदानुक्रमः मध्य भारत मे लोक प्रिय हिंदु धर्म न्यूयॉकः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. बेली, एफजी (1 9 57) जाति और आर्थिक फ्रंटियरः हाईलैंड उड़ीसा मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस में एक गांव।
16. बर्नेट, एस, फ्रूजेटी, एल।, ओस्टर, ए।, (1 9 76) पदानुक्रम"ाद्ध नोट्स ड्यूमॉन्ट एंड दक्विटिक्सद जर्नल ऑ एि"ायनस्टडीज, वॉल्यूम, 35, संख्या 4. (अगस्त 1 9 76), पीपी 627646।
17. बार्नेट, एक। (1 9 7 9) विचारधारा दन्यूविंडः दक्षिण एि"ाया में बदलती पहचान दहेगः मौटन पब्लि"ार्स।
18. बर्नेट,एस,और सिल्वरमैन,जी।, (1 9 7 9) विचारधारा और हर रोज जीवन मिं"ागन विष्वविद्यलय।
19. बर्नेट,एस,फ्जेटी,एल।, ओस्टर, ए।, (एड्स।)(1 9 82) व्यक्ति की अवधारणाएंः किन्ि"ाप,जाति और विवाह भारत में कैम्ब्रिजः हार्वर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस।
20. बेलामी, आर (एड।) (1 99 4) एंटोनियोग्राम्स्कीः प्री.प्रिजनराइटिंग कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटीप्रेस।
21. अम्बेडकर, आर (1 9 17) भारतमेंजातिः अनकातंत्र, उत्पत्ति, और विकास, भारतीय पुरातन, खंड प्स्प्
22. जयपाल, एन। (2001) भारतीय समाज और सामाजिक संस्थान, नई दिल्लीः टलांटिक प्रका"ान और वितरक।
23. रथ, एन । (1 99 6) ग्रामीण समाज में महिलाएं विकास के लिए एकक्वेस्ट। नई दिल्लीः एमडी प्राइवेट लिमिटेड। कुमार मांजरेंदरपू (पू"ठ 6652–6656)
24. चौबे, आर। और शर्मावी। (2006) । सामाजिक सांस्कृति कमानव विज्ञान, भोपाल (एमपी): मध्य प्रदे"ा हिंदी ग्रंथ अकादमी।
25. स्अर्न डब्ल्यू, रॉबर्ट (2003), चेंगिंग इंडियाः उपमहाद्वीप पर बुर्जुआ क्रांति, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, यूके।
26. मंजरे, एस के (2016), छत्तीसगढ में सतनाम आंदोलनः रा"ट्र निर्माण का स्रोत, अप्रकाष्ति एक फिल निंबध सामाजिक विज्ञान स्कूल, गुजरात विष्वविद्यलाय।
27. मंजरे, एक के और बंजारे एक के (2015), ''छत्तीसगढ मेरा सतनाम एंडोलन'', संघ/संघष,दलित साहित्यिक अध्ययन केईजोरनल, बॉल्यूम। 4, अक 1
28. सेनवानी, आईआर। (1 99 3), छत्तीसगढ़ के स्त्रिया आंडोलन मीस तनाम पंथ का योगदान (1885–19 47), इतिहास विभाग, पं। रविषंकर शक्ल विश्वविद्यालय रायपुर।